कहानी

आखिरी गहना

डॉ. गीता शर्मा

मैडम…आज आप फिर लेट हैं

सॉरी सर… वो…हर दिन कोई न कोई बहाना होता है आपके पास… प्रिंसिपल ने उलाहना देते हुए कहा. अपमान को निगलकर, आंसुओं को आंखों की कोर पर रोक मैंने स्टॉफ रूम की ओर रुख किया. मेरी रोनी सूरत के पीछे छिपे तिरस्कार की चोट को विभा ने भांप लिया, अरे छोड़ न…मत ध्यान दिया कर… तू ही बता क्या करूं…कितनी कोशिशें तो कर लीं इन पांच सालों में…अब तो सुबोध को भी यही लगता है कि मैं ही नहीं चाहती कि मेरा ट्रांसफर हो…इतना बुरा-भला बोलते हैं कि क्या बताऊं…? इनके- उनके रोज - रोज के तानों से तंग आ चुकी हूं…नौकरी छोड़ना भी चाहूं तो भी तो नहीं छोड़ सकती…केवल इसी का तो आसरा रह गया है अब…क्या करूं…? कहां जाऊं…? कुछ नहीं सूझ रहा …कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा…ऐसे अंधे मोड़ पर लाकर छोड़ दिया है जिंदगी ने… मेरे आंसुओं ने मेंढ़ तोड़कर अपनी राह बना ली थी.

मंत्री जी से मिल कर देख ले, आज शहर में हैं… डाक बंगले में रुके हैं, आज सुबह ही तो इन्होंने बताया…विभा ने मुझे ढांढस देते हुए बताया.

मंत्री जी से…पर कैसे ? मेरी तो कोई जान पहचान नहीं है ? उनके पी ए से बात करके तेरी मीटिंग फिक्स करवा देती हूं. तू अपनी स्थिति अच्छे से बताना उन्हें, वो जरूर गौर करेंगे. हम्मम…

पता है न… मुफ्त में आजकल कोई काम नहीं होता… हम्मम…आखिरी गहना था, वो भी बेच दिया, मैंने उसे लिफाफा दिखाते हुए कहा.

लंबे दु:ख और संघर्ष की टूटन मेरी आवाज में उतर आई थी. मैं अकेले कैसे जाऊंगी…तू चल न साथ में… मैंने अपना डर और झिझक जाहिर करते हुए कहा-डरने की कोई बात नहीं है…सुना है, बड़े भले इंसान हैं. थोड़ी देर में उसने बताया कि उसके पति ने मीटिंग के लिए शाम का समय ले लिया है तो स्कूल से सीधे वहीं जाना होगा। वे मुझे वहीं मिल जाएंगे।बचपन से ही डाक बंगले की एक डरावनी सी छवि मेरे मन मस्तिष्क पर न जाने क्यों अंकित हो गई है।शायद कोई कहानी सुनी होगी कभी किसी राक्षस की, जिसने एक राजकुमारी को वहां कैद कर लिया था। किसी तरह अपने मन को तैयार किया और स्कूल से सीधे उस चारदीवारी से घिरे बड़े से आहते में जा पहुंची। बड़े बड़े दरख्तों के बीच से गुजरती हवा की आवाज मेरे भय को और बढ़ा रही थी। बाहर मिलने वालों की काफी गहमागहमी थी। तिवारी ने समझाया कि अगर मैं अपनी समस्या अच्छे से बता दूंगी तो काम बन जाएगा।

सहमे पर सधे कदमों से मैंने उस बड़े से कमरे में प्रवेश किया .सामने बड़े से सोफे पर माननीय मंत्री जी बैठे हुए थे, सफेद कपड़ों सफेद बालों में एक गरिमामयी व्यक्तित्व, पिता जैसे …देखकर कुछ तसल्ली हुई। मैं एक तरफ खड़ी हो गई।

सर… मैडम अपने ट्रांसफर के लिए आई हैं सर, तिवारी जी साथ हैं… पी ए ने मेरी ओर इशारा करते हुए बताया.

कौन… तिवारी…? विभा मैडम के हसबैंड, कहते हुए वह बाहर निकल गया. कहिए…

माननीय …मैं अपना ट्रांसफर अपने गृहनगर के शासकीय विद्यालय में करवाने के लिए आपसे निवेदन करने आई हूं…प्लीज़ सर मेरे आवेदन पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कीजिये…मेरा ट्रांसफर बहुत जरूरी है…मेरे पति…उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है… मेरी हकलाहट मेरे भय को उजागर कर रही थी।हम्मम…क्या हुआ है आपके पति को

सर…पांच साल पहले हुए एक एक्सीडेंट के बाद लाचार हो गए हैं. उन्हें अकेले संभालना बहुत मुश्किल होता है. वे खुद से करवट भी नहीं ले सकते…वहां घर है परिवार है तो उनकी देखरेख अच्छे से हो सकेगी… अपनी रुलाई को रोकने की नाकाम कोशिश करते हुए मैंने कहा.

यहां कोई व्यवस्था नहीं है किसी को रख लीजिए देखभाल के लिए… कोई नहीं है सर…केयर टेकर के भरोसे छोड़कर नौकरी पर जाती हूं पर .. उन लोगों की लापरवाही के कारण कई बार गिर चुके हैं, स्कूल से लौटने पर बेहोश मिलते हैं मुझे, खून से लथपथ, अपनी हिचकियों को स्थगित कर मैंने अपनी बात जारी रखी-

बहुत उम्मीद लेकर आई हूं सर…आखिरी विकल्प है…तिवारी जी और विभा से बहुत तारीफ सुनी है आपकी…तो सोचा कोशिश करके देख लेती हूं…मैंने सांसों को संयत करके कहा अरे चिंता मत करिए आप इधर आइए, यहां बैठिए, उन्होंने पानी का गिलास देते हुए कहा, शांत हो जाइए आप पहले… धन्यवाद सर, आप बस मेरा ट्रांसफर कर दीजिए मैंने धीरे से घूंट के साथ ही अपना सब्र निगलते हुए कहा हां… हां… जरूर, हम देखते हैं…आपने पहले आवेदन दिया है?

जी …महोदय …सक्षम अधिकारियों को कई बार दे चुकी हूं…पिछले पांच सालों में कई बार… मेरी आवाज फिर भर्राने लगी. अरे… आप रो क्यों रहीं हैं…शांत हो जाइए. आप तो कितनी बहादुर हैं, समर्थ हैं और खूबसूरत भी…माशा अल्लाह ! सर ये… आवेदन पत्र के साथ लिफाफा टेबल पर रखते हुए मैंने कहा. इसे आप अपने पास रखिए, आपके काम आएंगे. पति के इलाज में काफी खर्च होता होगा… है न? जी सर…कोई बात नहीं है सर…आप बस मेरा ट्रांसफर कर दीजिए मेरा… मैंने असंयत होकर कहा.

अरे…कहा तो…इसकी कोई जरूरत नहीं है, मेरा हाथ पकड़ कर मेरा लिफाफा देते हुए उनके चेहरे की भाव भंगिमा बदलने लगी.

सहसा मुझे लगा कि सामने झक सफेद कपड़ों में एक भेड़िया बैठा है. मैं अंदर तक सिहर गई. लिफाफा वहीं छोड़, हड़बड़ाकर दरवाजे की ओर भागी. किंचित ठिठके पैरों ने सोचा, क्या यही अंतिम विकल्प है? आसमां पर लालिमा की जगह कालिमा उतर आई थी. जब घर पहुंची तो गली से एक एम्बुलेंस बाहर निकल रही थी. मेरा दिल जोरों से धड़क उठा. अनहोनी की आशंका से मेरे पैर कांपने लगे. बिस्तर से गिरने की वजह से सुबोध बेहोश हो गए थे तो अंकल एम्बुलेंस से यूनिवर्सल अस्पताल ले गए हैं…तुमको भी फोन किया था पर… मकान मालिकन आंटी की बात पूरी होती उससे पहले ही मैं उल्टे पांव दौड़ ली.

पहले से ही अनियमित धड़कनें और तेज होती जा रही थी। जैसे तैसे हांफते - कांपते अस्पताल पहुंची. सुबोध को ओटी में शिफ्ट किया जा रहा था… मैडम कहां थी आप? कितनी देर कर दी आपने, यहां साइन कीजिए …और बिलिंग काउंटर पर पैसे जमा कराइए…जल्दी…

डगमगाते पैरों से यहां से वहां भागती हुई स्वयं को कोस रही थी, लानतें भेज रही थी कि आखिर मैं वहां गई ही क्यों? संज्ञाशून्य सी मैं स्ट्रैचर पर पड़े सुबोध को देख रही हूं…सिर पर चोट लगने से उनका पूरा चेहरा खून से सना हुआ है…और मेरा शर्म, ग्लानि और अपराधबोध से… स्त्रियां वहां भी अपराधबोध ओढ़ लेतीं हैं,जिस अपराध में उनकी हिस्सेदारी नगण्य होती है विशेषकर परिवार को लेकर वे अपने आप को स्वयं ही कठघरे में खड़ा कर लेती हैं। पता नहीं आज कैसे गिर गये…पता नहीं आज कौन - कौन कहां - कहां से गिरा है? मन की व्यथा प्रार्थनाओं में बहने लगी. भेड़ को देखते ही भेड़िए की उपस्थिति का भय… ओटी के बाहर जड़वत खड़ी हूं, मौन साधे…न जाने कितनी तरह के विचारों, मनोभावों का मंथन चल रहा है अंदर ही अंदर… शब्द नहीं मिल रहे जो मेरी मन :स्थिति को, मेरी बेआवाज सिसकियों को, मेरी निरीहता को,असहायता को, निस्पृह सामाजिक संवेदना और संबंध शून्यता को आकार देते। क्या सुबोध की विकलांगता मेरी विवशता बन गई है…लेकिन मैं व्यवस्था की विकलांगता से कभी हार नहीं मानूंगी। मन ने अपना निश्चय दोहराया कि कुछ भी हो जाए मैं अपनी अस्मिता अपना आखिरी गहना कभी नहीं बेचूंगी. घोर अवसाद के गहरे काले क्षणों में मेरे भीतर से एक उजली किरण फूट रही है.

क्लास by बड़े भाई

अच्छा व्यवहार सदैव कुछ अधिक देता है

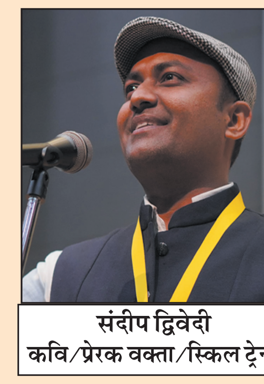

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

कभी किसी विद्वान से महाभारत का एक किस्सा सुना था कि महाभारत में अभिमन्यु की चक्रव्यूह में मृत्यु से क्रोधित अर्जुन ने जब जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा ली तो जयद्रथ घबरा गया और वो मृत्यु के भय से रणभूमि छोड़कर भागने लगा. तब आचार्य द्रोण ने उसे रोका और निश्चिन्त होकर बैठने को कहा.

तब यूँ ही बैठे बैठे जयद्रथ ने पूछा - आचार्य , मुझको और अर्जुन को आपने ही पढ़ाया, दोनों को आश्रम में समान सुविधाएं मिली, आपने जो अर्जुन को सिखाया वो ही हमें भी सिखाया, सबकुछ एक सा रहा, फिर क्यों आज मुझे उससे भय लग रहा है कि वो मुझे मार देगा. मैं उसका सामना करने की हिम्मत क्यों नही जुटा पा रहा ?

तब आचार्य द्रोण ने हँसते हुए कहा था - जयद्रथ, ऐसा इसलिए क्योंकि अर्जुन की जिज्ञासा, विनम्रता और उसकी लगन मुझसे हमेशा कुछ अधिक ले जाती थी और वो, जो कुछ मुझसे सीखता था उसका पूरी लगन से अभ्यास करता था और उसकी यही व्यवहार उसे औरों से बेहतर बनाता चला गया. तुममे शायद इसकी कमी रही हो और इसीलिए संभव है कि तुम्हें आज उसका सामना करने को अपने रणकौशल पर संदेह हो रहा हो.

यह कथा स्पष्ट करती है कि आपका अच्छा व्यवहार सदैव् आपको थोड़ा अधिक देता है. जैसे कि अर्जुन को आचार्य द्रोण से मिला.

अगर आपके साथ हजार बार भी अच्छे व्यवहार का अच्छा नतीजा नहीं मिला हो, तब भी मैं कहूँगा कि चाहे जो भी हो, कुछ अधिक आपको देने की क्षमता आपके अच्छे व्यवहार में ही है और इसी में हमेशा रहेगी. बस यही कहना था.

गीत

विभूति तिवारी

इक टूटा-फूटा घर बूढ़ा

इक टूटा फूटा घर बूढ़ा, हाथों से जाने वाला है द्य
ये पुरखों की शेष निशानी, कोई और हड़पने वाला है .

गुज़ारी कड़ी धूप में उम्र सारी
तरसता रहा छांव को
मौसम के निर्मम थपेड़े लिये
रहा ढूंढ़ता ठांव को
वो मेघों के सारे
गरजते इशारे
सब देकर जाने वाला है .

इक टूटा फूटा घर बूढ़ा, हाथों से जाने वाला है .
ये पुरखों की शेष निशानी, कोई और हड़पने वाला है .

बिखरने लगी है मृदा भी स्वयं से,
सरकने लगीं बल्लियां.
निखरते थे जो कल सुमन शाख तरु पर,
लचकने लगीं डालियां.
थोड़ी मरम्मत,
मोहब्बत का मरहम,
बस इतना ही लेने वाला है..

इक टूटा फूटा घर बूढ़ा, हाथों से जाने वाला है.
कल वक्त अधूरा जो बीता, अब पूरा होने वाला है .

लघु कथा

विज्ञापन

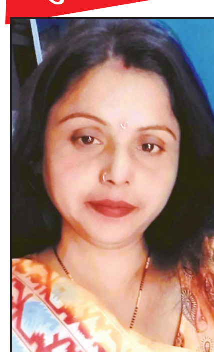

रानी प्रियंका वल्लरी

अखबार के पन्ने पलटते हुए. नजर दौड़ी. जिसमें लिखा था मोटे-मोटे अक्षरों में विज्ञापन करना सीखें घर बैठे हज़ारों कमाए. यह पढ़ कर मेरा मन विचलित हुआ. घर बैठे हज़ारों कैसे कमाए जा सकते हैं. इतने में मोबाइल पर घंटी बजी. लपकते हुए पकड़ी. उधर से आवाज आई जो जानी पहचानी सी थी लग रही थी. एक ही सांस में उसने अपनी सारी भरास निकाल दी.

मेरे घर आती नहीं हो? हाँ क्यों आओगी? कहीं मिलती तब अपने घर आने की मिन्नतें करती ,ऐसे में ना कहना अच्छा नही लगा,उसमें में भी उसका इमोशनल ब्लैकमेल.हाँ क्यों आओगी मेरे घर हम गरीब जो ठहरे.

हमने भी मन बना लिया आज थोड़ा टहल लिया जाए. थोड़ी बहुत गप्पे-शप्पे मार लेंगे. परंतु यह गप्पेबाजी बड़ा महँगी पड़ी. उसने बातों के दौरान यह ज़ाहिर किया की हमने एक अपना छोटा सा श्रृंगार प्रसाधन खोला है,साथ में प्रधानमंत्री जी वाला थेसीस भी दे दी,हर आदमी को आत्म निर्भर होना चाहिए.साथ में हर प्रोडक्ट व कोस्मेटीक आइटम रखकर हमे उसके फ़ायदे समझाए जा रही थी.कहे जा रही थी तुम्हें सूट करेगा यह लिपिस्टिक तुम पर ज़्यादा फबेगा. मै भी मेकअप के बारे में थोड़ी कच्ची, सो उसकी बातों को दिल और दिमाग दोनों में सेट कर ली तथा खुद को स्वर्ग की अप्सरा जैसी खूबसूरत बनने की ख्वाब देखने लगी.

जब तक पूछूँ उसने हमारे लिए सारे महँगे महँगे प्रोडक्ट पैक कर दी.शायद हमारे चेहरे को वह पढ़ रही थी,जो यह मेरी बातों में आ चुकी है.

मन ही मन सोच रही थी यह कितनी दिलदार है हम तो एक भी श्रृंगार के सामान किसी को ना दें.

यह पूरा झोला हमारे हाथ में पकड़ाते हुए बोली बहन जब इसका इस्तेमाल करना तो एक बार अपना फोटो ज़रूर खींच भेजना. हमने भी हामी भर दी और ऐसा ही किया. कुछ देर में उसने प्रतिउत्तर में सारे वस्तुओं का कुल मूल्य लिखकर अपना पेटीएम नम्बर व्हाट्?सप्प कर दी. अब हमारे चेहरे के नूर देखने वाले थे.

मेसेज पढ़ते ही दिमाग रेस के घोड़े के तरह दौड़ने लगा. अच्छा यही विज्ञापन हैं. हम ऐसे ही घर बैठे हज़ारों में कमा सकते हैं.

बुकशेल्फ/ 'असमय का अंधेरा' सरल और संपृक्त कविताएं

डॉ. सुधीर सक्सेना

नोबेल पुरस्कार विजेता पोल-कवयित्री विश्वावा शिंबोर्स्का की कविता-पंक्तियां हैं- हम राजनीतिक युग की संतानें हैं. शिंबोर्स्का की ये पंक्तियां जहां हमारे समय के मर्म को उद्घाटित करती है, वहीं यह भी सच है कि कोई भी चेतना संपन्न रचनाकार अपने समय की स्थितियों और प्रवृत्तियों से उदासीन या अविचलित नहीं रह सकता. सद्य-प्रकाशित कविता-संकलन असमय का अंधेरा पर दृष्टिपात करें तो यह शीर्षक कतई समय निरपेक्ष या अराजनीतिक प्रतीत नहीं होता, बल्कि हमारे समय पर साहसिक टिप्पणी नज़र आता है तथा दर्शाता है कि कवि के लिये समय मायने रखता है और असमय का अंधेरा उसे सालता है. इसके साथ ही उसे धूमिल के कहे कविता घेराव में बौखलाये हुये आदमी का संक्षिप्त एकालाप है मार्का खाने में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता, क्योंकि कवि एक तो एकालाप की बजाय वार्तालाप की मुद्रा में नजर आता है, दूसरे वह अपने को जलाकर फैलायें उजास की बात तो करता ही है, साथ ही कविता की एक पंक्ति से टूटेगी नीरवता कहकर कविता में अपने गहरे यकीन को भी व्यक्त करता है.

सुरेश गुप्ता

सुरेश गुप्ता कविता की दुनिया में विचरते भले ही रहे हैं, लेकिन असमय का अंधेरा कविता की दुनिया में उनके पदार्पण का पर्याय है. कविता के बीहड़ में यह उनका पहला डग है, लेकिन वह डगमग नहीं, बल्कि सधा हुआ है. वह संवेदनशील है, क्योंकि उसे बहुत कचोटता है. यह असमय का/दिन का अंधेरा. दिन है और अंधेरा है, यह हमारे समय का उदघाटन है. यह हमारे समय की विडंबना है. कहें तो त्रासदी है और हमारी चिंता का सबब भी. कवि के तईं कविता का फलक देखिये ः कविता कोई नहीं पढ़ता/कविता/सबको पढ़ना चाहती है वह आगे कहता है ः कविता जिसे कोई/पढ़ना नहीं चाहता/चाहती है युद्ध में शांति/शांति में समरसता. यहां मुझे बरबस रूसी कवि कायसिन कुलियेव की कविता याद आती है, जो बदी के बरक्स ने की, युद्ध के बरक्स शांति, असत्य के बरक्स सत्य और अंधकार के बरक्स रोशनी की हिमायत करती है.

सुरेश गुप्ता का कविर्मन प्रेमाकुल है. कविताओं में प्रेम के कई शेड्स हैं. वह एकांत में एकांतिक कोना तलाशता है. वह बज़िद कहता है- प्रेम किस्मत को नहीं मानता. उसके लिए मेरा नहीं हमारा होना मायने रखता है. प्रेम और उसकी तलाश पारस्परिक है. प्रायः कवियों की मानिंद वह नास्टैलिक है; अपने व्यतीत को लेकर भावुक. उसकी कविताओं में घर, परिवार और मित्रों के लिये स्पेस है. वहां मां हैं, पिता है, बेटा है, खिलचीपुर है, गाड़गंगा है, कोरोना है. वहां मित्रों के परिचित आत्मीय चेहरे हैं. मित्रों - महेन्द्र गगन और मनोज पाठक के लिये लिखी कविताएं अछी बन पड़ी हैं और उनमें महेन्द्र और मनोज के चेहरे बखूबी झाँकते हैं. कविता महेन्द्र का होना बरबस भोपाल के तत्समय के मिजाज को भी बयां करती है. सुरेश अपनी कविताओं में व्यक्तियों को उपादानों के साथ और जगहों को सन्दर्भों के साथ लाते हैं और यही बात उनकी कविताओं के विन्यास को ताकत देती है. मसलन पिता कविताओं में कुर्सी और आईने के साथ आते हैं. बेटे मनु के बहाने वह छूट गयी, बिसरा और बिलमा दी गयी चीजों को याद करते हैं. कविता में चित्रित खिलचीपुर फ़कत मध्यप्रदेश का खिलचीपुर नहीं है, बल्कि वह अनगिन खिलचीपुरों का प्रतिनिधित्व करता है. प्रसंगवश यह भी कि कवि को कविता की ताकत में यकीन है और कविता उसे साहस देती है और आश्वस्ति भी. वह कहता भी है कि कविता तुम्हें उजाड़ेगी नहीं और सिकोड़ेगी भी नहीं.

सुरेश गुप्ता की कविताएं सरल मन की सहज अभिव्यक्तियां हैं. वहां कृत्रिमता या आडंबर नहीं है और न ही जटिलता. उसे असमय का दिन का अंधेरा कचोटता है. जो कवि साहसपूर्वक कह सकता है कि जो डर रहे हैं/ अपने खिलाफ/आवाज उठने के डर से, बिलाशक चेहरों को चीन्ह रहा है और उम्मीद जगाता है कि आगामी कविताओं में वह उनकी शिनाख्त भी करेगा. मुक्तिबोध के प्रश्न-पार्टनर तुम्हारी पालीटिक्स क्या है, जवाब इन कविताओं में निहित है. कविर्लोक में कवि सुरेश गुप्ता का स्वागत और स्वस्ति कामना.

असमय का अंधेरा (कविता संकलन) : सुरेश गुप्ता
प्रकाशक : प्रथमेश प्रिंटर्स, भोपाल मूल्य : रू. 100/-

कविता

डॉ. शबनम आलम

आवारा बादल

भटकता रहा आसमां में
पर ढूंढ रहा था मैं
एक बंजर धरा

जब मैं बरखा बन उतरूं
उस बंजर धरा पर
तो उसमें समाहित हो जाऊं ऐसे
जैसे बेजान शरीर में आत्मा
और थोड़ी जान आ जाए उसमें, थोड़ी आस जग जाए

आखिरकार वो मुझे मिल ही गई
और मैं बरस पड़ा पूरी शिद्दत से
उसने भी आत्मसात किया पूरी मुहब्बत से

जैसे ही धरा में कुछ जान आई
छुपी-दुबकी घासों की जड़ें
जो बेजान पड़ी थी, कईं सालों से
धरा के गर्भ में
वो भी बाहर निकल कर
झांकी धीरे से
फिर मुस्कुराई

और थोड़े ही दिनों में
लगी लहलहाने
घासों को लहलहाता देख
धरा को भी एक उम्मीद जगी!

घासों की हरियाली देख
लोग धरा को भी उपजाऊ समझनें लगें
और इस तरह
धरा के साथ, मेरा जीवन भी सार्थक हुआ

कि मैं भी तो
इसी धरा का छोटा सा हिस्सा हूं
जो एक आवारा बादल बन
भटकता रहा आसमां में !

स्मृति शेष

अपने समाज और समय से रूबरू कराते हैं रांगेय राघव

मीनाक्षी दुबे

समाज की विडंबनाओं तथा अपने समय की तल्ख सचाइयों को लिखने वाले असाधारण लेखन प्रतिभा के धनी रांगेय राघव का लेखन आज भी हमें भीतर तक झकझोर देता है.

चालीस वर्ष से भी कम उम्र में ही इन्होंने कई किताबें लिख डाली थीं, इनमे संस्कृत एवं अँग्रेजी साहित्य का अनुवाद तथा कुछ विश्व स्तरीय कहानियों एवं उपन्यासों का अनुवाद भी शामिल है. उन्होंने कविताएँ भी लिखीं.

इनके इस वृहद् साहित्य-संसार में प्रमुख कहानियाँ 'गदल', 'पंच परमेश्वर', 'घिसटता कंबल', 'नारी का विक्षोभ', 'गूंग', 'रोने का मोल', 'धर्मसंकट' आदि हैं. इन प्रतिनिधि कहानियों में समाज की परंपराओं, रूढ़ियों एवं कुरीतियों का विरोध है. उनकी दृष्टि समाज के हर वर्ग पर जाती है और तो और 'रोने का मोल' कहानी में गली में रोते विवश कुत्ते की व्यथा को भी वे स्पष्ट पकड़ पाते हैं. एक बूढ़ा कुत्ता जो चाहे जब रो पड़ने की आदत के कारण, मोहल्ले के पंडित जी की प्रताड़ना का शिकार होता रहता है. इनकी कहानियों में जहाँ सामंती प्रथाओं का विरोध है वही स्त्री की स्वतंत्रता का पोषण भी है.

'नारी का विक्षोभ' कहानी ऐसी ही नारी सविता की कहानी है जो प्रेम विवाह होने के बावजूद भी अपनी पारिवारिक स्थिति से विद्रोह कर बैठती है. घूंघट में चेहरा न छिपाने पर, ससुराल में, गली के बचो द्वारा पतुरिया कहा जाना उसे ठेस पहुँचाता है. कुछ छोटी- बड़ी घटनाओं के बाद वह पति का घर छोड़ देती है और अकेले रहने का निर्णय लेती है. सन 1950 के दशक में एक स्त्री द्वारा इस तरह का निर्णय लियआ जाना और एक पुरुष लेखक द्वारा इस तरह की की व्यथा को रेखांकित करना साहसिक ही कहा जाएगा.

पंच परमेश्वर कहानी में एक पुरुष का दर्द शामिल है. चंदा का सौतेला बड़ा भाई है कन्हाई जो कि काना है. उसके पास कमाई के संसाधन हैं वहीं चंदा रोज कमाई करके जैसे तैसे अपना और अपनी पत्नी फूलो का पेट भरता है. अपनी गरीबी से ऊबकर फूलो, कन्हाई के घर जा बैठती है. पंचायत भी उसी का साथ देती है. चर्चित कहानी गदल एक प्रम- कथा है, जिसमें प्रेम को प्रकट नहीं किया गया है लेकिन प्रेम के प्रति पूरा समर्पण है. यह नारी के स्वाभिमान और विद्रोह की कथा भी है. यह ग्रामीण अंचल की है इसलिए भाषा भी उसी तरह की है.

कहानी घिसटता कंबल में बहुत देर के बाद भी नहीं सीजने वाली दाल के माध्यम से जीवन दर्शन को समझाया गया है. जब रागिनी कहती है -जीवन भी ऐसा ही पथरीला हो चला है जैसी पथरीली है यह दाल. विपिन अपनी नवविवाहिता पत्नी को समझाता है- मन एक ऐसा केन्द्र है जिससे हर दिशा में बाण छूटा करते हैं. धन हमारे सुखों का मूल नहीं बल्कि प्रेम ही हमारे जीवन की सान्त्वना है.

कहानी धर्मसंकट एक पारिवारिक कहानी है जिसमें घर की स्त्री का द्वंद्व है जो कि माँ भी है और पत्नी भी. अपने पति और बेटे के द्वंद्व के बीच वह किस सही माने किसे अपनाए और किसका साथ निभाए इसका रोचक वर्णन है. गूंगे कहानी मानवीय संवेदनाओं की कहानी है. गूंगे के अंदर स्वाभिमान भी है और दायित्व बोध भी. चमेली के द्वारा उन सामर्थ्यवान लोगों को भी गूंगा ही कहा गया है जो किसी और के लिए कुछ नहीं कर पाते.

आंचलिक उपन्यास कब तक पुकारूँ बहुत साल पहले पढ़ा था, फिर दूरदर्शन पर इसी नाम से धारावाहिक भी देखा. रांगेय राघव ने अपने घर शहद पहुँचाने वाले, नट जाति के जरायम पेशा माने जाने वाले सुखराम के जीवन को लेकर यह उपन्यास रचा. उसकी दो पत्नियाँ थीं प्यारी और कजरी. इसमें मनुष्य की विवशता और रिश्तों के प्रति विश्वास का ताना बाना है. परिस्थिति वश सुखराम अपनी पत्नी को ठाकुर से संबंध बनाने की इजाजत दे देता है. इसके बावजूद उनका आपसी स्नेह और भरोसा बना रहता है. बंगाल के अकाल की विभीषिका को उन्होंने जीवंत अनुभव किया. वे आगरा से बंगाल पहुँचे और अकाल पीड़ितों की पीड़ा को निकट से देखा. होटलों के पाइप से बहकर आते अन्न के दानों और रोटी के टुकड़ों पर झपटते और उनके लिए झगड़ते लोगों की कथा- व्यथा को उन्होंने अपने उपन्यास विषाद मठ में रेखांकित किया. कहा जाता है कि बंकिमचन्द्र जी के उपन्यास आनंद मठ की टक्कर में यह उपन्यास रचा गया था. इसी तरह जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य कामायनी की टक्कर में वे अपना महाकाव्य मेधावी लेकर आए थे. 'मुर्दों का टीला' एक ऐसा उपन्यास जिसमें प्राचीन भारतीय संस्कृति, मोहन जोदड़ो का इतिहास, सिंधु घाटी की सभ्यता आदि को लेखकीय दृष्टिकोण से देखा गया है. उस समय की सामाजिक व्यवस्था, जीवन यापन की पध्दति, मनुष्य के संचर्ष आदि का जीवंत वर्णन है. सन् 1961 में अपनी बीमारी ब्लड कैंसर के चलते इन्होंने दो उपन्यास रचे, आखिरी आवाज और पतझड़. ये अलग- अलग कथावस्तु के थे. जहाँ पतझड़ शहरी परिवेश को लेकर बुना गया था वहीं आखिरी आवाज में ग्रामीण अंचल को समाहित किया गया था. यह असाधारण प्रतिभा का ही असर था. उन्होंने अपने दोनों उपन्यास, एक ही समय में डिक्टेट करवाए, वह भी असाध्य बीमारी से जूझते हुए. उनके रचना संसार के बारे में जितना कहा जाए कम है. यह एक लेखक का जुनून ही कहा जाएगा कि वे अपने जीवन अनुभवों को लगातार कागज पर उतारते जाते हैं.

उनकी लेखन प्रतिभा ऐसी थी कि उनके कक्ष में लेखन के लिए चार- पाँच टेबलें लगी होती थीं और उन पर अलग- अलग कलर की इंक के पेन व कागज़ के दस्ते रखे होते थे. वे हर टेबल पर जाकर अपने मन के उद्गार लिखते और एक समय में ही विभिन्न रचनाओं का सृजन होता रहता. कभी कहानी, कभी कविता, कभी महाकाव्य तो कभी उपन्यास की शक्ल में.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी